

# SHRI MAHESH SHARMA

Shri Mahesh Sharma is a social leader, working for sustainable rural development of tribal villages in Jhabua, Madhya Pradesh. He is the Co-founder and President of Shivganga Samagra Gramvikas Parishad. He is widely recognized in the region for revival of tribal self-esteem and their old age traditions which embed 'Parmarth Ki Parampara'. Spending 20 years in the region, he has earned immense reverence and compassion among tribal population of Jhabua and beyond.

2. Born on March 14, 1957 in a small village near Dada, Madhya Pradesh, Shri Sharma spent his childhood and teenage in the company of social reformers and leaders. He did his B.A. from Jiwaji University Gwalior in 1978. He was an active member of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad and participated in various student lead movements during this period. At an early age of 19 years, he left his home to devote his life working for others. He stood firm against the emotional dilemmas put forth by the family and relatives. From 1976 to 1998, being a full-time social worker with Rashtriya Swayamsevak Sangh, he worked on the various subjects including education with Vidya Bharathi and rural and tribal development with Vanvasi Kalyan Ashram.

3. With his long experience in the social field, Shri Sharma went to Jhabua in 1998, a tribal district in Western Madhya Pradesh which was infamous and perceived to be an unsafe place to work for the next five years, he visited several villages and met thousands of tribal families to study the various aspects of the community. On contrary to what he heard about the community, he witnessed a lot of strengths in the tribal society which can even solve world problems. He started motivating local people to come together to solve their own problems. He identified the potential and mobilized tribal youth to form a team of strong social leaders becoming change-makers in their own villages. In 2007, the team established an organization to work with a long-term vision of holistic rural development of Jhabua. They revived an age-old tribal tradition of coming together to work with an inspiration of Pal Mardi (To work for others). This mass movement of coming together manifested itself into various development works led by the community participation including water conservation and afforestation.

4. Shri Sharma has been invited by different institutes and organizations to share his experience and provide a guidance. With his strong determination and perseverance to impact several lives, he is inspiring a lot of people across the country. Youth from premier Institutes like IITs, IIMs etc. are coming and staying with him in Jhabua to learn nuances of social change. He is continuing his journey with more determination and devotion.

पद्म श्री




# श्री महेश शर्मा



श्री महेश शर्मा एक सामाजिक नेता हैं जो झबुआ, मध्य प्रदेश के आदिवासी गांव के स्थायी ग्रामीण विकास के लिए कार्य करते हैं। आप शिवगंगा समग्र ग्राम विकास परिषद के सह-संस्थापक और अध्यक्ष हैं। आपको आदिवासियों के सम्मान और उनकी पुरानी परंपराओं का पुन: उत्थान करने के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है, जिन परंपराओं में 'परमार्थ की परंपरा' भी शामिल है। इस क्षेत्र में बीस वर्ष गुजारते हुए, आपने झबुआ की आदिवासी जनसंख्या और इसके बाहर भी अपार सम्मान और सहानुभूति प्राप्त की है।

2. आपका जन्म 14 मार्च, 1957 को ददा, मध्य प्रदेश के निकट एक छोटे से गांव में हुआ। आपने अपना बचपन और किशोर अवस्था समाज सुधारकों और सामाजिक नेताओं के साथ गुजारी है। आपने जिवाजी विश्वविद्यालय से 1978 में कला स्नातक की डिग्री प्राप्त की। आप अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सक्रिय सदस्य रहे हैं और आपने इस अवधि के दौरान विभिन्न अग्रणी छात्र आन्दोलनों में भी भाग लिया। आपने 19 वर्ष की अल्प आयु में, दूसरों के लिए अपना जीवन लगा देने के लिए घर छोड़ दिया। आप परिवार और रिश्तेदारों के भावात्मक कश्मकश के विरुद्ध डट कर खड़े रहे। 1976 से लेकर 1998 तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालीन सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते आपने विद्या भारती के साथ शिक्षा तथा वनवासी कल्याण आश्रम के साथ ग्रामीण और जनजातीय विकास सहित विभिन्न विषयों पर कार्य किया।

3. सामाजिक क्षेत्र में लंबे अनुभव के साथ, आप 1998 में अगले पांच वर्षों तक कार्य करने के लिए पश्चिम मध्य प्रदेश के आदिवासी जिले झबुआ गए, जो बदनाम क्षेत्र था और काम करने के लिए एक असुरक्षित स्थान भी था। वहां आपने बहुत से गांवों का दौरा किया और विभिन्न सामाजिक पहलुओं का अध्ययन करने के लिए हजारों आदिवासी परिवारों से मिले। आपने वहां के समुदाय के बारे में जो सुना था उसके विपरीत आपने पाया कि आदिवासी समुदाय में इतनी ताकत है कि जिससे विश्व की समस्याओं का भी हल किया जा सकता है। आपने, लोगों की समस्याओं को सुलझाने के लिए इकट्ठे होने के लिए स्थानीय लोगों को प्रेरित करना आरंभ कर दिया। आपने आदिवासी युवाओं की शक्ति को पहचाना और दृढ़ सामाजिक नेताओं का एक दल बनाने के लिए उन्हें एकजुट किया, उन्हें अपने गांव में चेन्ज मेकर बनने के लिए प्रेरित किया। वर्ष 2007 में झबुआ के समग्र सामाजिक विकास के दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ कार्य करने के लिए दल ने एक संगठन की स्थापना की। गांव वासियों ने पल मर्दी (दूसरों के लिए कार्य करना) की प्रेरणा के साथ काम करने के लिए एकजुट होने की पुरानी आदिवासी परंपरा को पुनर्जीवित किया। इतनी बड़ी संख्या में लोगों के इकट्ठा हो जाने से सामाजिक भागीदारी से विभिन्न विकास संबंधी कार्य हो पाए, इनमें जल संरक्षण और वन रोपण कार्य शामिल हैं।

4. अनुभवों को साँझा करने और मार्गदर्शन करने के लिए आपको विभिन्न संस्थाओं और संगठनों द्वारा आमंत्रित किया जाता रहा है। लोगों के जीवन को प्रभावित करने के आपके दृढ़ संकल्प और अध्यवसाय से आप पूरे देश में बहुत से व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। आईआईटी, आईआईएम आदि जैसे उत्कृष्ट संस्थानों के युवा झबुआ में आपके पास आते हैं तथा आपके पास रुकते हैं ताकि वे सामाजिक परिवर्तन के सूक्ष्म भेदों को सीख सकें। पक्के इरादे और निष्ठा के साथ आपकी यह यात्रा अभी भी जारी है।